पहले उपचार को ही प्राथमिकता दी जाती है।

तकनीक • देश के विभिन्न हिस्सों से लगभग 200 से अधिक प्रतिनिधि होंगे शामिल

स्थायी कृषि के लिए मृदा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

नागपुर| भारतीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन सोसायटी (आईएसएसएलयूपी) द्वारा स्थायी कृषि के लिए मृदा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 21 से 23 फरवरी तक राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, अमरावती रोड के डॉ. एसपी रायचौधरी सभागार में किया गया है। मुख्य अतिथि के रूप में एचसी गिरीश, आईएफएस, आयुक्त, वाटरशेड विकास विभाग, कर्नाटक और विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. एम मधु, निदेशक आईसीएआर-आईआईएसडब्ल्यूसी देहरादून उपस्थित रहेंगे। आईएसएसएलयूपी के अध्यक्ष डॉ. ब्रम्हा स्वरूप द्विवेदी, सदस्य, एएसआरबी, नई दिल्ली हैं। राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एन. जी. पाटील, निदेशक, आईसीएआर-एनबीएसएस एंड एलयूपीए नागपुर हैं। राष्ट्रीय सेमिनार के आयोजन सचिव ब्यूरो के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. के. कार्तिकेयन हैं। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न हिस्सों से लगभग 200 से अधिक प्रतिनिधियों (वैज्ञानिकों, छात्रों, नीति नियोजकों, उद्योगपतियों) के भाग लेने की उम्मीद है।

मृदा सुरक्षा और मृदा स्थिरता पर जोर

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो के निदेशक डा. एन.जी. पाटील ने पत्र-परिषद में बताया कि मृदा सुरक्षा और मृदा स्थिरता संयुक्त राष्ट्र 2030 के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह भारत में कृषि उत्पादकता के आधिक्य के लिए आवश्यक है। संसाधनों के बढ़ते असमान उपयोग ने प्राकृतिक संसाधनों मुख्य रूप से मिट्टी को प्रभावित किया है। भोजन, ईंधन और फाइबर उत्पादन की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए स्थायी प्रबंधन की प्रविधियों के माध्यम से मिट्टी के कार्यों में समवर्ती वृद्धि की आवश्यकता होती है।

क्या है उद्देय

महत्वपूर्ण रूप से हस्तक्षेप कर मिट्टी के कार्यों के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावहारिक तरीकों में रूपांतरित करके कृषि भूमि की वैश्विक स्थिरता में योगदान दिया जा सकता है। ये विधियां उत्पादकों की समझ को समृद्ध करती हैं और उन्हें अपनी प्रबंधन प्रविधियों की स्थिरता का आकलन करने में सक्षम बनाती हैं। सेमिनार के मुख्य उपविषय मृदा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं (एसईएसएस) का आकलन करने हेतु भूमि संसाधन इन्वेंट्री और इसकी प्रगति, खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु टिकाऊ कृषि के लिए मृदा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं एवं मृदा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं (ईएसएस), संरक्षण और प्रबंधन हैं। पत्र-परिषद में डॉ. के कार्तिकेयन, डॉ. ओ बी रेड्डी, डॉ. रीतिक बिस्वास, डॉ. प्रमोद तिवारी, समन्वयक डॉ. महेंद्रसिंह रघुवंशी उपस्थित थे।

तरुण भारत
Apla Nagpur | 2024-02-21 | Page- 6
epaper.tarunbharat.net

शाश्वत शेती, जमिनीची परिस्थिती विषयावर चर्चासत्र आज

◆ **नागपूर, २० फेब्रुवारी**

भारतीय मृदा सर्वेक्षण आणि भूमी उपयोग योजना सोसायटी-आयएसएसएलयूपी यांच्या वतीने शाश्वत शेतीसाठी जमिनीची परिस्थिती आणि तंत्रज्ञान सुविधा या विषयावर राष्ट्रीय चर्चासत्राचे आयोजन २१ ते २३ फेब्रुवारीदरम्यान अमरावती मार्गावरील आयसीएआर-एनबीएसएस ॲण्ड एलयूपीच्या डॉ. रायचौधरी सभागृहात करण्यात आली असल्याची माहिती पत्रपरिषदेत आयसीएआर-एनबीएसएस ॲण्ड एलयूपीचे निदेशक डॉ. एन. जी. पाटील यांनी दिली.

याप्रसंगी बोलताना डॉ. पाटील म्हणाले, चर्चासत्रास मुख्य अतिथी म्हणून आयएफएसचे आयुक्त एच. सी. गिरीश, विशेष अतिथी म्हणून आयसीएआर- आयआयएसडब्ल्यूसी डेहरादूनचे डॉ. एम. मधू उपस्थित राहणार असून, कार्यक्रमाचे उद्घाटन २१ फेब्रुवारी रोजी सकाळी ९.३० वाजता होणार आहे. या चर्चासत्रात सुमारे दोनशे प्रतिनिधी सहभागी होणार असून, वैज्ञानिक, विद्यार्थी, उद्योगपती सहभागी होणार आहेत. जमिनीच्या स्थितीत होणारा बदल, कृषी क्षेत्रात जमिनीनुरूप घ्यावयाची पिके, जमिनीची गुणवत्ता सुधारण्यासाठी कराव्या लागणाऱ्या उपाययोजना, जल शुद्धीकरण, जैवविविधता संरक्षण आदी विषयांवर यात चर्चा होणार असल्याचे त्यांनी सांगितले. पत्रपरिषदेत चर्चासत्राचे संयोजक डॉ. के. कार्तिकेयन, डॉ. एच. बिस्वास, डॉ. ओबी रेड्डी, डॉ. प्रमोद तिवारी उपस्थित होते.

◀ *(तभा वृत्तसेवा)*

Powered by iDocuments

TheHitavada
Nagpur City Line | 2024-02-21 | Page- 8
ehitavada.com

ISSLUP to conduct three-day national seminar on SESSA from today

■ Staff Reporter

INDIAN Soil Survey and Land Use Planning Society (ISSLUP) is organising a three-day national seminar on Soil Ecosystem Services for Sustainable Agriculture' (SESSA) at Dr SP Raychaudhuri Auditorium, ICAR-NBSS&LUP, Amravati Road, from Wednesday onwards. HC Girish, Commissioner, Watershed Development Department, Karnataka, will be the chief guest while Dr M Madhu, Director, ICAR-IISWC, Dehradun, will be the guest of honour, Dr Bramha Swaroop Dwivedi, Member, ASRB, New Delhi, and President of the ISSLUP Society, will preside.

Dr N G Patil, Director, ICAR-NBSS & LUP, is the Convenor of the national seminar while Dr K Kartikeyan, Principal Scientist of the Bureau is the Organising Secretary.

Over 200 delegates including scientists, students, policy planners, industrialists etc from different parts of the India are expected to attend.

Soil security and soil sustainability form the foundation for achieving the Sustainable Development Goals (SDGs) of UN 2030, and are essential for supporting agricultural intensification in our country. Increased and uneven resource utilisation has adverse impact on natural resources, mainly soils. The long-term sustainability of food, fuel, and fibre production necessitates concurrent enhancements in soil functions through sustainable management practices," said Dr Patil during a press conference held on Tuesday.

Scientists can significantly intervene and contribute to the global sustainability of agricultural lands by translating scientific knowledge about soil functions into practical methods. These methods enrich growers understanding and enable them to assess the sustainability of their management practices. Soil plays a crucial role in providing various ecosystem services (ESS) that are fundamental to life and support human activities," he added.

Dr Patil was of the view that in this digital age, there is an urgent need of compilation of soil data, water data and details of the crop patterns across the nation for better study and results. The central agency cannot do all this all alone and the State governments, who have Agricultural ministry and machinery, must come forward.

Dr H Biswas, Dr G P Obireddy, Dr Pramod Tiwari and Dr Mahendra Raghuvanshi were prominently present.

Powered by iDocuments